8

आपका विवाह सफल हो सकता है ...

सैक्स से जुड़ी समस्याओं को सुलझाने से

किसी को भी यह विश्वास दिलाने की आवश्यकता नहीं है कि विवाह में सैक्स से जुड़ी समस्याएं पाई जाती हैं। समय-समय पर या किसी हद तक अधिकतर विवाहित दम्पत्तियों को सैक्स से जुड़ी समस्याएं आती हैं। कई विवाह तो इस कारण असफल हो जाते हैं क्योंकि दम्पत्ति, चाहे वे मसीही ही क्यों न हों, अपने जीवन की इस क्षेत्र से सम्बन्धित समस्याओं को सुलझा नहीं पाते।

ऐसी समस्याओं को कैसे सुलझाया जा सकता है? आप विवाह के बाद होने पर, अपने साथी के साथ सैक्स से जुड़ी किसी समस्या के होने पर उससे कैसे बच सकते या उसे कैसे सुलझा सकते हैं?

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए इस बात की मुख्य दिलचस्पी अपने अध्ययनों में समाजशास्त्री, मनोवैज्ञानिक, विवाह के सलाहकारों या परिवार के मामलों द्वारा दी गई प्रस्तुतियों पर नहीं है। इसके विपरीत इस बात का लक्ष्य सैक्स पर बाइबल की बात को बताना और विवाह में उठने वाली सम्भावित समस्याओं को समझाने में इसकी शिक्षाओं से सहायता करने को दिखाना है। बाइबल सैक्स के बारे में क्या बताती है?

हमें यह समझना आवश्यक है कि सैक्स स्वाभाविक है और अच्छा है

पहले तो बाइबल सैक्स को ऐसी चीज़ के रूप में दिखाती है, जो अच्छी है, यह स्वाभाविक है। यानी अपने साथी के साथ शारीरिक सम्बन्ध होना वैसे ही मानवीय होना है, जैसे खाना और सोना स्वाभाविक मानवीय क्रियाएं हैं। सैक्स की इस समझ को जीवन के स्वाभाविक भाग के रूप में मानते हुए उपयुक्त अवसर पर बाइबल व्यवहारिक रूप में बिना शर्म किए सैक्स की बात करती है।

परन्तु बाइबल इस विचार से आगे बढ़ जाती है कि सैक्स स्वाभाविक है और इसे ऐसी चीज़ के रूप में दिखाती है, जो अच्छी है। जब परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया, तो उसने कहा कि सब कुछ ''बहुत अच्छा है'' (उत्पत्ति 1:31)। इसमें मनुष्य का सैक्स वाला भाग भी है।

परमेश्वर ने कहा, ''आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं'' (उत्पत्ति 2:18क)। स्त्री को ''उसके लिए ऐसा सहायक जो उससे मेल खाए'' बनाते हुए (उत्पत्ति 2:18ख; ''उसके लिए सहायता करनी हो''; KJV) उसने ऐसा व्यक्ति बनाया जो लैंगिक रूप में पुरुष से भिन्न हो और उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पूरक हो। यदि आदम के लिए अकेला रहना ''अच्छा नहीं'' था तो आदम के लिए एक स्त्री के साथ होना अच्छा *था,* यानी विवाह में उसके साथ एक होना अर्थात उसके साथ शारीरिक रूप में एकता अच्छी थी। यीशु ने अपनी इस दृष्टि की ओर मुड़कर देखते हुए कहा, ''वे दोनों एक तन होंगे'' (मत्ती 19:5ख)। विवाह के भीतर विवाह

और सैक्स को परमेश्वर के पुत्र की स्वीकृति है। इसलिए न केवल यह स्वाभाविक है, बल्कि सकारात्मक रूप में भी अच्छा है।

यह विचार कि सैक्स एक सकारात्मक विचार है कुछ समय से भुला दिया गया है। कई मसीही लोगों के मन में है कि सैक्स गंदा, अशुद्ध या अश्लील है। कई तो इसे बहुत हद तक एक आवश्यक बुराई के रूप में देखते हैं। जो मनुष्यजाति के बनाए होने के लिए आवश्यक है पर इसे कुछ ऐसा मानते हैं जिससे आनन्द लेना पापपूर्ण बन जाता है। यह विचार जिसने भी आरम्भ किया हो, पर बाइबल का नहीं है। यानी यह परमेश्वर से नहीं आए।

जब मसीही युवा विवाह करते हैं तो उन्हें यह समझने में दिक्कत आ सकती है कि विवाह में सैक्स का कार्य स्वाभाविक भी है और अच्छा भी। उन्हें जीवन भर व्यभिचार से बचने की शिक्षा दी जाती रही और उन्हें यह समझने में कठिनाई आ सकती है कि विवाह हो जाने के बाद वह सब सही कैसे हो गया, जो पहले गलत था। जिस बात की पहले मनाही थी अब उसी की अनुमति है। यदि उन्हें विवाह के लिए परमेश्वर की योजना को पूरा करना है, तो उन्हें यह समझना आवश्यक है कि शारीरिक सम्बन्ध विवाह से जुड़ा है और इसका उसी में आनन्द लिया जाना आवश्यक है।

श्रेष्ठगीत सैक्स का जश्न मनाता है और ऐसा करते हुए सुझाव देता हैकि संन्तुष्टिजनक शारीरिक सम्बन्ध (क) आपसी आकर्षण, (ख) एक-दूसरे की उपस्थिति की इच्छा, (ग) प्रेम से भरी बातों का आदान-प्रदान और (घर) प्रेम के कार्यों का परिणाम होता है।[1] बाइबल सैक्स की नियमावली नहीं है पर विवाह के सम्बन्ध में दो प्रेमी उस कामुक उत्साह को बनाने और बनाए रखने के लिए इस पुस्तक में पाई जाने वाली प्रेम की बातों का इस्तेमाल कर सकते हैं, जिनकी उनके विवाह में आवश्यकता है।

हमें सैक्स के दुरुपयोग से बचना आवश्यक है

दूसरा, बाइबल बताती है कि जब सैक्स का दुरुपयोग होता है तो इसका परिणाम पाप होता है। जिस प्रकार मनुष्य की किसी भौतिक या इच्छा का दुरुपयोग हो सकता है,[2] वैसे ही सैक्स की इच्छा भी दुरुपयोग हो सकता है सैक्स की भूख होना गलत नहीं है पर सैक्स का दुरुपयोग होना गलत है!

पुराना नियम सैक्स के कई पापों अर्थात सैक्स की इच्छा की गलत दिशा की निन्दा करता है। सैक्स से जुड़े पापों में व्यभिचार, निकट सम्बन्धियों में सम्पूर्ण समलैंगिकता और पशुगामिता आते हैं।[3] सम्भवतया ये सभी शब्द यूनानी शब्द *porneia* में पाए जाते हैं जिसका अनुवाद नये नियम में ''अनैतिकता'' (NASB) या ''फोर्निकेशन'' (अविवाहित लोगों में यौन सम्बन्ध) (KJV) हुआ है।[4]

विशेषतया विवाह को बनाए रखने के लिए पति और पत्नी दोनों को व्यभिचार से दूर रहना आवश्यक है। स्पष्टतया व्यभिचार का विचार विवाह को नष्ट कर सकता है। विवाह के समय आप एक-दूसरे के वफ़ादार रहने अर्थात ''जब तक आप दोनों जिन्दा हैं'' केवल अपने साथी के प्रति वफ़ादार रहने की शपथ लेते हैं। बहुत बार विवाह इसलिए टूट जाते हैं क्योंकि पति-पत्नी में से एक उस शपथ पर खरा नहीं उतरता है।[5]

व्यभिचार से बचना अनिवार्य है। दोनों को ये सावधानियां बरतनी चाहिए:

(1) *ऐसी परिस्थितियों से बचें जिन में आप परीक्षा में पड़ सकते हैं।* विपरीत सैक्स वाले किसी व्यक्ति के साथ अकेले होने से बचें; अपने परिवार की समस्याएं या परेशानियां किसी ऐसे व्यक्ति को न बताएं जो आपको आकर्षक लगता है, चाहे वह आपके साथ कितना भी सहानुभूति रखता हुआ लगे। यदि कोई आप में अनुचित दिलचस्पी रखे तो उस व्यक्ति से दूर रहें।[6]

(2) *अपने ही साथी के साथ सैक्स में संतुष्टि पाने पर ध्यान दें।* जब आप अपनी पत्नी या अपने पति से दूर होते हैं, तो अगली बार उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध से मिलने वाले आनन्द पर विचार करें।

(3) *अपने साथी को शारीरिक सन्तुष्टि देने की इच्छा रखें।* शारीरिक सम्बन्ध में आपका लक्ष्य केवल अपनी सन्तुष्टि पाना नहीं बल्कि सन्तुष्टि देना भी है। अपने अंतरंग समयों में अपनी पत्नी या पति को और आनन्द देने में सहायता के ढंगों की तलाश करें।[7] इकट्ठा रहने के समय को सीखने वाली प्रयोगशाला के रूप में प्रचार करें जिसमें समय बीतने पर अपने सैक्स से जुड़े सम्बन्ध को सुधारने का ढंग सीख जाएं।

सबसे बढ़कर मसीही लोगों को सैक्स से जुड़ी सन्तुष्टि पर संसार की सोच से अलग सोच रखनी आवश्यक है। जब संसार के लोग बड़े प्रेम करने वालों की बात करते हैं तो वे आम तौर पर उन लोगों की बात करते हैं जिनके कई-कई लोगों के साथ शारीरिक सम्बन्ध थे। परन्तु मसीही व्यक्ति जानता है कि सबसे बड़े प्रेम करने वाले वही हैं जो विवाह में एक-दूसरे के साथ रहते, अर्थात जीवन भर एक साथ रहते हैं और इकट्ठे होने पर एक-दूसरे की शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

हम कभी अपने साथी को सैक्स से वंचित न रखें

बाइबल बताती है कि दोनों में से कोई भी विवाह में अपने साथी को उसके शारीरिक सम्बन्ध से वंचित न रखें। 1 कुरिन्थियों 7:1-5 में पौलुस ने लिखा:

> उन बातों के विषय में जो तुम ने लिखीं, यह अच्छा है, कि पुरुष स्त्री को न छूए। परन्तु व्यभिचार के डर से हर एक पुरुष की पत्नी, और हर एक स्त्री का पति हो। पति अपनी पत्नी का हक पूरा करे; और वैसे ही पत्नी भी अपने पति का। पत्नी को अपनी देह पर अधिकार नहीं पर उसके पति का अधिकार है; वैसे ही पति को अपनी देह पर अधिकार नहीं, परन्तु पत्नी को। तुम एक-दूसरे से अलग न रहो; परन्तु केवल कुछ समय तक आपस की सम्मति से कि प्रार्थना के लिए अवकाश मिले, और फिर एक साथ रहो, ऐसा न हो, कि तुम्हारे असंयम के कारण शैतान तुम्हें परखे।

ये आयतें उन कई सच्चाइयों को दर्शाती हैं जो विवाह में सैक्स से जुड़ी समस्याओं में सहायक हो सकती हैं:

(1) *यह बताती है कि सैक्स का उद्देश्य मनोरंजन, प्रजनन या सन्तानोत्पादन से कहीं बढ़कर है।* यह इस बात को समझती है कि स्त्री और पुरुष दोनों की शारीरिक आवश्यकताएं हैं। यह कुछ लोगों पर इस विचार के विपरीत है कि सैक्स का एक मात्र वैध उद्देश्य सन्तानोत्पादन है। विवाह में शारीरिक सम्बन्ध के कई उद्देश्य हैं: बच्चे उत्पन्न करना, एकता को बढ़ावा देने में सहायता

करना (और एकता का प्रतीक देना), और आवश्यकताओं यानी केवल शारीरिक ही नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक भी हैं, की पूर्ति करता।

(2) *यह बताती है कि स्त्री और पुरुष दोनों की शारीरिक इच्छाएं होती हैं।* आधुनिक समयों से पहले कई लोगों का यही विचार था कि केवल पुरुष में ही, या पुरुष की ही शारीरिक इच्छाएं होती हैं।

(3) *यह बताती है कि दोनों में से किसी भी साथी को दूसरे को शारीरिक सम्बन्धों से वंचित नहीं रखना चाहिए।* पौलुस ने ये निर्देश इस तथ्य के आधार पर दिए कि न तो पति को और न पत्नी को ही अपने शरीर पर अधिकार है, केवल उनके साथी को एक-दूसरे पर अधिकार है। सैक्स का इस्तेमाल हथियार के रूप में, या सैक्स न करने को दण्ड के रूप में इस्तेमाल करने की परमेश्वर की प्रेरणा पाए प्रेरित पौलुस ने मनाही की।

(4) *यह नियम को एक अपवाद देता है।* पौलुस ने संकेत दिया कि पति और पत्नी सैक्स से दूर रह सकते हैं, पर उस अपवाद पर उसने तीन शर्तें रखीं। यदि दम्पत्ति सैक्स से दूर रहता है तो यह (क) केवल धार्मिक कारणों के लिए (''ताकि तुम्हें प्रार्थना के लिए अवकाश मिले''),(ख) केवल थोड़ी देर के लिए, (ग) और आपसी सहमति से (''सम्मति से'')। स्पष्टतया पौलुस ने उन से जो विवाहित थे, निरन्तर शारीरिक सम्बन्ध का आनन्द लेने की उम्मीद की।

याद रखें कि विवाह का अर्थ केवल सैक्स नहीं है

चौथा, बाइबल बताती है कि सैक्स विवाह का सबसे आवश्यक पहलू क्यों नहीं है। हम एक ऐसे समाज में रहते हैं जो सैक्स से पीड़ित है, विज्ञापना और मनोरंजन में सैक्स पर ही ज़ोर दिया जाता है। विवाह के सम्बन्ध में प्रसिद्ध सलाह इसे ऐसा दिखाती है जैसे अच्छे विवाह के लिए अच्छे सैक्स वाले जीवन का होना ही महत्वपूर्ण माना जाता है-जैसे बिस्तर पर एक निर्धारित प्रदर्शन का होना आवश्यक है वरना विवाह असफल माना जाएगा।

क्या बाइबल इस आधुनिक विचार की पुष्टि करती है? नहीं! बाइबल बताती है कि सैक्स स्वाभाविक है और अच्छा है, पर कहीं भी यह संकेत नहीं देता कि विवाह में सैक्स ही सब कुछ है। बाइबल सैक्स के विषय पर खामोश नहीं है, पर यह सैक्स की नियमावली अर्थात ''कैसे करें'' बताने वाली पुस्तक भी नहीं है। जहां तक बाइबल बताती है सैक्स कोई प्रदर्शन नहीं है जिसमें लोगों को प्रसन्नतापूर्वक वैवाहिक जीवन जीने के लिए सफल होना आवश्यक है।

इस सच्चाई पर कि विवाह में सैक्स सब कुछ नहीं है, ज़ोर दिया गया है। किसी दम्पत्ति का सैक्स जीवन अच्छा हो सकता है पर उनका विवाह दयनीय स्थिति में हो सकता है, या हो सकता है कि तकनीकी दृष्टिकोण से सामान्य सैक्स जीवन होने के बावजूद किसी का वैवाहिक जीवन सही हो। सैक्स में निपुणता खुशहाल वैवाहिक जीवन की तरह नहीं है, और खुशहाल वैवाहिक जीवन के लिए सैक्स में माहिर होना भी आवश्यक नहीं है। पर इसलिए इससे बड़ी बात यह है कि सैक्स की तकनीक में माहिर होने के बजाय प्रेम करने वाले, समझने वाले, दयालु, निस्वार्थ, त्याग करने वाले और क्षमा करने वाले, सहन करने वाले और सहनशील बनें। यदि किसी दम्पत्ति में ये गुण आ जाएं, तो उनका वैवाहिक जीवन खुशहाल हो सकता है।

इसलिए विवाह में सैक्स को पूर्णता के एक भाग के रूप में अर्थात पूरे पैकेज में एक चीज़

के रूप में देखा जाना चाहिए। जीवन के हर क्षेत्र में पति और पत्नी को एक-दूसरे के प्रति दयालु और सहनशील होना आवश्यक है। उन्हें एक-दूसरे को प्रसन्न करने के लिए एक-दूसरे से प्रेम से बात करना और अपने आपको देना चाहिए।

सारांश

परमेश्वर के ढंग से खुशी मिलती है। जीवन के हर क्षेत्र में चाहे वह विवाह में सैक्स का सम्बन्ध ही क्यों न हो, उसके निर्देश से सन्तुष्टि मिलती है। यदि कोई दम्पत्ति सैक्स पर बाइबल की शिक्षा को समझने और इसकी शिक्षाओं को मानने का प्रयास करता है तो वे सम्भवतया सन्तुष्टिजनक सैक्स सम्बन्ध पा सकते हैं।

हमें समझ आए या न कि परमेश्वर के नियमों को मानने से हमें प्रसन्नता और सन्तुष्टि कैसे मिल सकती है, हमें चाहिए कि हम उन्हें मानते रहें! परमेश्वर आज भी परमेश्वर ही है, और उसे भाने के लिए हमें उसकी इच्छा को मानना आवश्यक है। यही बात विवाह में, विवाह से और सैक्स के सम्बन्ध में लागू होती है, जैसा कि जीवन के अन्य हर क्षेत्र में!

टिप्पणियां

[1]श्रेष्ठगीत की कविताओं में दो प्रेमी एक-दूसरे के रूप को सराहते हैं। (1:10, 15, 16; 2:14; 4:1-7, 9-15; 6:4-9; 7:1-9; में प्रेमी अपनी प्रेमिका का व्याख्यान करता है जबकि 2:3, 4, 8, 9; 5:10-16 में प्रेमिका उसका व्याख्यान करती है।) वे एक-दूसरे के साथ को तरसते हैं (3:1-4), एक-दूसरे को बताते हैं कि वे एक-दूसरे से कितना प्रेम करते हैं (4:10; 7:10), और एक-दूसरे को चूमने और लाड़ करने की बातें करते हैं (1:2; 2:6; 7:6-13)। [2]उदाहरण के लिए, खाने की इच्छा करना अच्छा है, पर उसका दुरुपयोग करना पेटू बना सकता है। फिर, आत्मसन्तुष्टि की बात बुरी नहीं, पर किसी दूसरे की भलाई की कीमत पर आत्म-सन्तुष्टि की चाह गलत है। [3]उदाहरण के लिए, इन बातों की मनाही के लिए, देखें लैव्यव्यवस्था 20:10-17. [4]उदाहरण के लिए, देखें इफिसियों 5:3; 1 थिस्सलुनीकियों 4:3. *Porneia* का इस्तेमाल ''हर प्रकार के अवैध शारीरिक संभोग के लिए'' होता है (वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एण्ड अदर अरली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा अंक, संशो. व सम्पा. फ्रैड्रिक विलियम बैंकर [शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 2000], 854)। [5]व्यभिचार (*porneia*) तलाक के लिए भी एकमात्र जायज़ कारण है; देखें मत्ती 5:32; 19:9. [6]कई बार व्यभिचार करने की परीक्षा में पड़ने पर, सबसे बढ़िया बात यूसुफ़ के नमूने को मानता है (उत्पत्ति 39:12)। परीक्षा के कारण से भाग जाना सही होता है। [7]किसी के व्यभिचार करने पर, ''निर्दोष'' साथी हो सकता है कि पूरी तरह से निर्दोष न हो, बल्कि उसमें दोषी साथी की सैक्स की आवश्यकताओं को सन्तुट करने से इनकार किया या उस की उपेक्षा की हो सकती है। अनुसंधानकर्त्ताओं ने पता लगाया है कि विवाहोत्तर सम्बन्ध ''आम तौर पर अत्यधिक सैक्स की भूख के कारण नहीं होते हैं। इसके विपरीत यह ध्यान खींचने और प्रेम की इच्छा के कारण होती है। सम्भवतया यह सैक्स की सन्तुष्टि की उतनी नहीं जितनी घमण्ड की सन्तुष्टि की इच्छा है। यह किसी को पूरी तरह से ध्यान देने और प्रेम करने की प्रेम भरी चमक में होने की इच्छा है'' (जिम हॉकिंस, *टार्निशड रिंग्स* [शिपन्सबर्ग, पानामा: ट्रयरर हाउस, 1993], 145)। बहाना चाहे कोई भी हो व्यभिचार पाप ही है।